श्री सत्यनारायण भगवान की आरती

जय लक्ष्मी रमणा,
स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी,
जन पातक हरणा॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

रतन जड़ित सिंहासन,
अद्भुत छवि राजे।
नारद करत नीराजन,
घंटा वन बाजे॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

प्रकट भए कलि कारण,
द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर,
कंचन महल कियो॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

दुर्बल भील कठोरो,
जिन पर कृपा करी।
चंद्रचूड़ एक राजा,
तिनकी विपत्ति हरी॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

वैश्य मनोरथ पायो,
श्रद्धा तज दीन्ही।
सो फल भाग्यो प्रभुजी,
फिर स्तुति कीन्ही॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

भाव-भक्ति के कारण,
छिन-छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीन्ही,
तिनको काज सरयो॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

ग्वाल-बाल संग राजा,
वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हो,
दीनदयालु हरि॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

चढ़त प्रसाद सवायो,
कदली फल मेवा।
धूप-दीप तुलसी से,
राजी सत्यदेवा॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

सत्यनारायणजी की आरती,
जो कोई नर गावे।
ऋद्धि-सिद्धि सुख-संपत्ति,
सहज रूप पावे॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

जय लक्ष्मी रमणा,
स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी,
जन पातक हरणा॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

श्री सत्यनारायण भगवान की आरती